रेखा झुनझुनवाला का पोर्टफोलियो मजबूत

टाटा समूह के शेयरों से मिली ताकत

दीपक कोरगांवकर और पुनीत वाधवा
नई दिल्ली, 26 मार्च

टाटा समूह के शेयरों में 27 प्रतिशत तक की बड़ी तेजी ने रेखा झुनझुनवाला को न सिर्फ बाजार को मात देने में मदद की है बल्कि मुकुल महावीर अग्रवाल, आशिष धवन, आशिष कचौलिया, विजय केडिया और अनिल कुमार गोयल ऐंड सीमा गोयल जैसे अन्य दिग्गज निवेशकों की तुलना में भी अपना पोर्टफोलियो प्रतिफल तेजी से बढ़ाने में मदद की है।

कैलेंडर वर्ष 2024 में अब तक रेखा झुनझुनवाला की नेटवर्थ 7 प्रतिशत या 2,865 करोड़ रुपये से ज्यादा बढ़ी है जबकि सेंसेक्स में 1 प्रतिशत से कम की वृद्धि दर्ज की गई है। 22 मार्च 2024 तक रेखा झुनझुनवाला की संयुक्त नेटवर्थ 41,676 करोड़ रुपये थी जो 7.4 प्रतिशत अधिक है। 31 दिसंबर 2023 के अंत में यह नेटवर्थ 38,811 करोड़ रुपये थी।

रेखा झुनझुनवाला के अलावा चेन्नई की चर्चित निवेशक डॉली खन्ना और मुकुल महावीर अग्रवाल ऐसे अन्य बड़े निवेशक हैं जिनका पोर्टफोलियो इस दौरान क्रम से 6.5 प्रतिशत और 1.7 प्रतिशत तक बढ़ा है। दूसरी तरफ आशिष धवन, विजय केडिया और अनिल कुमार गोयल ऐंड सीमा गोयल के पोर्टफोलियो में 2 प्रतिशत ओर 13 प्रतिशत के दायरे में गिरावट के साथ बाजार के मुकाबले कमजोरी आई। स्मॉलकैप शेयरों में भारी गिरावट की वजह से इनके पोर्टफोलियो पर दबाव पड़ा। आशिष कचौलिया का पोर्टफोलियो महज 0.1 प्रतिशत बढ़ा।

बढ़ रही निवेश की कीमत

- रेखा झुनझुनवाला के पोर्टफोलियो का प्रदर्शन बाजारों के मुकाबले बेहतर रहा
- विश्लेषक टाटा समूह के शेयरों पर उत्साहित बने हुए हैं और उन्हें आगे भी इनमें तेजी बरकरार रहने की उम्मीद है
- कैलेंडर वर्ष 2024 में अब तक रेखा झुनझुनवाला की नेटवर्थ 7 प्रतिशत या 2,865 करोड़ रुपये से ज्यादा बढ़ी है

टाटा के शेयरों से मिला दम

झुनझुनवाला के पोर्टफोलियो में ज्यादातर तेजी टाटा समूह के शेयरों में आई उछाल के कारण दर्ज की गई। टाटा समूह की चार कंपनियों - टाइटन कंपनी, टाटा मोटर्स (डीवीआर समेत), इंडियन होटल्स कंपनी और टाटा कम्युनिकेशन- में रेखा झुनझुनवाला के 25,573 करोड़ रुपये मूल्य के शेयर हैं और उनके पूरे पोर्टफोलियो में इन शेयरों की वैल्यू 61 प्रतिशत है। इस दौरान इन कंपनियों ने रेखा झुनझुनवाला की कुल नेटवर्थ में 1,652 करोड़ रुपये जोड़े। 2024 में टाटा मोटर्स में अब तक 26 प्रतिशत की तेजी आई है और उनके कुल पोर्टफोलियो लाभ में इस शेयर का योगदान 1,184 करोड़ रुपये है। इंडियन होटल्स का शेयर 27 प्रतिशत, टाटा कम्युनिकेशन का 9 प्रतिशत और टाइटन का करीब 1 प्रतिशत चढ़ा। सीएनआई रिसर्च के प्रबंध निदेशक किशोर ओस्तवाल का मानना है कि समूह की कंपनियों के शेयरों में और तेजी की गुंजाइश है।

प्रतिस्पर्धियों पर दबाव

इस बीच डॉली खन्ना की कुल नेटवर्थ 401 करोड़ रुपये से 6.5 प्रतिशत तक बढ़कर कैलेंडर वर्ष 2024 में (22 मार्च तक) 427 करोड़ रुपये पर पहुंच गई। डॉली खन्ना के पोर्टफोलियो में 40 प्रतिशत या 172 करोड़ रुपये का योगदान रखने वाले चेन्नई पेट्रोलियम कॉरपोरेशन ने कुल पोर्टफोलियो लाभ में 36 करोड़ रुपये का इजाफा किया।

अतुल ऑटो, इलेकॉन इंजीनियरिंग, तेजस नेटवर्क्स और वैभव ग्लोबल में निवेश रखने वाले विजय केडिया की निवेश पूंजी 9 प्रतिशत या 115 करोड़ रुपये घटकर 1,126 करोड़ रुपये रही। अनिल कुमार गोयल ऐंड सीमा गोयल की नेटवर्थ 13 प्रतिशत घटकर 1,868 करोड़ रुपये दर्ज की गई।

म्युचुअल फंडों में प्रायोजकों का हिस्सा एक लाख करोड़ रुपये के करीब

समरीन वानी
नई दिल्ली, 26 मार्च

इक्विटी फंडों की हिस्सेदारी बढ़ रही है हालांकि ज्यादातर परिसंपत्तियां अभी भी डेट योजनाओं में हैं

अपनी ही योजनाओं में म्युचुअल फंडों का दांव एक लाख करोड़ रुपये के करीब पहुंच गया है। उद्योग निकाय एसोसिएशन ऑफ म्युचुअल फंड्स इन इंडिया के आंकड़ों का बिजनेस स्टैंडर्ड ने विश्लेषण किया है। इसके अनुसार योजनाओं की सभी श्रेणियों में प्रायोजक व सहायक निवेश फरवरी में 95,058 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। यह मार्च 2023 के मुकाबले 28.9 फीसदी की बढ़ोतरी का संकेत देता है। लगातार दो साल तक गिरावट के बाद यह बढ़ोतरी देखने को मिली है।

कुछ बदलाव की वजह बाजार की तेजी भी हो सकती है। एसऐंडपी बीएसई सेंसेक्स मौजूदा वित्त वर्ष में फरवरी तक 22.9 फीसदी चढ़ा। मार्च 2022 में सालाना आधार पर यह एक फीसदी से भी कम था।

बाजार नियामक सेबी ने म्युचुअल फंडों का परिचालन करने वालों से अपने ही फंडों में निवेश को जरूरी बना रखा है ताकि निवेशकों के साथ उनके भी हित जुड़े रहें। जुलाई 2021 की सेबी की बोर्ड बैठक के नोट के मुताबिक अल्पावधि में रिटर्न हासिल करने के लिए म्युचुअल फंडों को आक्रामक पोजीशन लेने का प्रोत्साहन मिल सकता है। म्युचुअल फंडों के कई कर्मचारियों को परिसंपत्ति प्रबंधन कंपनी में इक्विटी और बोनस दिया जाता है जिससे कि कर्मचारियों के हित भी शेयरधारकों के साथ जुड़े रहें।

सेबी ने कहा कि अल्पावधि में एएमसी के शेयरधारकों के हितों का जुड़ाव यूनिटधारकों के साथ शायद नहीं हो सकता। ऐसे में एएमसी व उसके कर्मचारियों का हित यूनिटधारकों के साथ जोड़ना महत्वपूर्ण हो जाता है।

ऐसे निवेश की कीमत मार्च 2019 में 83,385 करोड़ रुपये थी। उस समय यह कुल प्रबंधनाधीन परिसंपत्तियों का 3.4 फीसदी था। तब से ऐसी रकम बढ़ती रही है जबकि परिसंपत्तियों की हिस्सेदारी घट रही है। मार्च 2022 में योगदान कुल परिसंपत्तियों का 2.2 फीसदी था और मार्च 2023 व फरवरी 2024 में यह 2 फीसदी से नीचे बना रहा। फरवरी में म्युचुअल फंड कुल 54.5 लाख करोड़ रुपये की परिसंपत्तियों का प्रबंधन कर रहे थे।

प्रायोजक व सहायक निवेश का बड़ा हिस्सा डेट फंडों में है। यह रकम 76,000 करोड़ रुपये से ज्यादा है। इक्विटी फंडों में यह 12,200 करोड़ रुपये से ज्यादा है जो मार्च 2023 के मुकाबले 83.6 फीसदी ज्यादा है। इस अवधि में डेट फंडों की परिसंपत्तियां 21 फीसदी बढ़ीं। पारंपरिक रूप से ऐसे निवेश में डेट का बड़ा हिस्सा रहा है। लेकिन ताजा आंकड़े बताते हैं कि अब इक्विटी की हिस्सेदारी 10 फीसदी से ज्यादा हो गई है।

डेट योजनाओं की हिस्सेदारी मार्च 2019 के 93 फीसदी के मुकाबले मार्च 2023 में घटकर 85 फीसदी रह गई। फरवरी में उनकी हिस्सेदारी 80 फीसदी थी। इसकी तुलना में इक्विटी योजनाओं की हिस्सेदारी मार्च 2019 के 6 फीसदी के मुकाबले फरवरी में 13 फीसदी पर पहुंच गई।

एलऐंडटी जुटाएगी 7,500 करोड़ रुपये

बीएस संवाददाता
मुंबई, 26 मार्च

इंजीनियरिंग क्षेत्र की दिग्गज कंपनी लार्सन ऐंड टुब्रो (एलऐंडटी) ने मंगलवार को कहा कि कंपनी के निदेशक मंडल ने 7,500 करोड़ रुपये जुटाने के प्रस्ताव को मंजूरी दी है। कंपनी ने कहा कि यह रकम बाह्य वाणिज्यिक उधारी, सावधि कर्ज, गैर-परिवर्तनीय ऋणपत्र या अन्य प्रतिभूतियों के जरिये जुटाई जाएगी। कंपनी के बोर्ड ने एमएसकेए ऐंड एसोसिएट्स को पांच साल के लिए कंपनी केवैधानिक ऑडिटर के तौर पर नियुक्ति को मंजूरी दी जो शेयरधारकों की मंजूरी पर निर्भर करेगा। कंपनी ने कहा, कंपनी की मौजूदा सांविधिक अंकेक्षक डेलॉयट हस्किंस ऐंड सेल्स एलएलपी अपना कार्यकाल कैलेंडर वर्ष 25 में होने वाली कंपनी की 80वीं एजीएम के बाद पूरा हो जाएगा।

डेट के जरिये रकम जुटाना एलऐंडटी की सामान्य कारोबारी गतिविधियों का हिस्सा रहा है। कंपनी की सालाना रिपोर्ट के मुताबिक वित्त वर्ष 23 में कंपनी ने 2,000 करोड़ रुपये के गैर-परिवर्तनीय डिबेंचर निजी नियोजन के आधार पर आवंटित किए। उसी सालाना रिपोर्ट में एलऐंडटी ने वित्त वर्ष 23-24 में लंबी अवधि का कर्ज जुटाने का प्रस्ताव भी रखा था ताकि परिपक्व हो रहे 4,500 करोड़ रुपये के कर्ज का भुगतान और अपने प्रस्तावित पूंजीगत खर्च के लिए रकम मिल सके। कंपनी ने हालांकि यह नहीं बताया है कि जुटाई जाने वाली रकम का इस्तेमाल कहां किया जाएगा। मार्च 2023 में एलऐंडटी की समूह स्तर पर उधारी 1.18 लाख करोड़ रुपये थी, जो एक साल पहले 1.23 लाख करोड़ रुपये थी। दिसंबर में समूह का सकल ऋण और इक्विटी का अनुपात 1.23 था। वित्त वर्ष 23 के आखिर में एलऐंडटी एकल आधार पर कर्ज मुक्त कंपनी थी।

आईपीओ से जुटाई रकम 20 फीसदी बढ़कर 62,000 करोड़ रुपये रही

सुंदर सेतुरामन
मुंबई, 26 मार्च

आरंभिक सार्वजनिक निर्गमों (आईपीओ) के जरिये जुटाई गई रकम वित्त वर्ष 2023-24 में 20 फीसदी बढ़ी। वित्त वर्ष के दौरान 76 भारतीय कंपनियों ने आईपीओ के मुख्य प्लेटफॉर्म के जरिये कुल 61,915 करोड़ रुपये जुटाए जबकि 2022-23 में 37 आईपीओ के जरिये 52,116 करोड़ रुपये जुटाए गए थे। प्राइम डेटाबेस के आंकड़ों के अनुसार साल 2022-23 में एलआईसी के आईपीओ को अलग रखें तो पिछले साल के मुकाबले आईपीओ के जरिये 58 फीसदी ज्यादा रकम जुटाई गई। एलआईसी का 21,008 करोड़ रुपये का आईपीओ मई 2022 में आया था।

मुख्य बाजार के आईपीओ में मैनकाइंड फार्मा ने 4,326 करोड़ रुपये जुटाए जो सबसे ज्यादा थे। इसके बाद जेएसडब्ल्यू इन्फ्रा के 2,800 करोड़ रुपये के आईपीओ का स्थान है। सबसे छोटा आईपीओ प्लाजा वायर्स का था जिसने 71 करोड़ रुपये जुटाए। कंपनियों के आईपीओ का औसत आकार वित्त वर्ष 23 के 1,409 करोड़ रुपये के मुकाबले काफी ज्यादा घटकर वित्त वर्ष 24 में 815 करोड़ रुपये का रह गया।

कुल मिलाकर सभी तरह की इक्विटी के जरिये जुटाई गई रकम वित्त वर्ष 24 में 2.4 गुना उछलकर 1.86 लाख करोड़ रुपये पर पहुंच गई जो इससे पिछले वित्त वर्ष में 76,911 करोड़ रुपये थी। इसमें तीव्र बढ़ोतरी व्यापक बाजारों के शेयरों की कीमतों में आई तेजी के कारण आई।

विभिन्न क्षेत्रों की कंपनियां वित्त वर्ष 2024 में आईपीओ बाजार से रकम जुटाने में सक्षम रहीं। पारंपरिक रूप से वित्तीय क्षेत्र के वर्चस्व वाले इस बाजार में उसकी मौजूदगी 9,655 करोड़ रुपये जुटाने के साथ सीमित रही जो कुल रकम का महज पांचवां हिस्सा है। नई पीढ़ी की तकनीकी कंपनियां भी काफी कम थीं और महज तीन ही आईपीओ बाजार में आए। प्राइम डेटाबेस के प्रबंध निदेशक प्रणव हल्दिया ने कहा कि ज्यादातर आईपीओ को निवेशकों की उत्साहजनक प्रतिक्रिया मिली।

75 आईपीओ के आंकड़े उपलब्ध हैं। इनमें से 54 को 10 गुना से ज्यादा बोलियां मिलीं और इसमें भी 22 को 50 गुना से ज्यादा आवेदन मिले जबकि 11 आईपीओ को तीन गुना से ज्यादा बोलियां मिलीं। बाकी 10 आईपीओ को 1 से 3 गुना आवेदन मिले।

खुदरा निवेशकों की प्रतिक्रिया भी पिछले वित्त वर्ष के मुकाबले ज्यादा रही। खुदरा आवेदन की औसत संख्या पिछले वित्त वर्ष के 6 लाख के मुकाबले 13 लाख पर पहुंच गई। सबसे ज्यादा खुदरा आवेदन (52 लाख) टाटा टेक्नोलॉजिज के आईपीओ को मिले। इसके बाद डोम्स इंडस्ट्रीज (41 लाख) और आईनॉक्स (37 लाख) का स्थान रहा। यह प्रतिक्रिया सूचीबद्धता के बाद मजबूत प्रदर्शन के कारण थी। सूचीबद्धता पर औसत लाभ वित्त वर्ष 24 में बढ़कर 29 फीसदी हो गया जो पिछले वित्त वर्ष में 9 फीसदी था।

75 आईपीओ में से 48 ने 10 फीसदी से ज्यादा का रिटर्न दिया। विभोर स्टील में सबसे ज्यादा लाभ एक दिन में 193 फीसदी मिला जिसके बाद बीएलएस ई-सर्विसेज (175 फीसदी) और टाटा टेक्नोलॉजिज (163 फीसदी) का स्थान रहा। 75 में से 50 से ज्यादा आईपीओ औसतन 65 फीसदी रिटर्न के साथ इश्यू प्राइस से ऊपर कारोबार कर रहे हैं।

वित्त वर्ष 24 में 96 कंपनियों ने बाजार नियामक सेबी के पास विवरणिका मसौदा (डीआरएचपी) जमा कराया जबकि इससे पिछले वित्त वर्ष में 75 कंपनियों ने डीआरएचपी जमा कराया था। हालांकि 59,000 करोड़ रुपये जुटाने की योजना बना रही 37 कंपनियों ने मंजूरी के बाद भी आईपीओ नहीं उतारा वहीं 1,000 करोड़ रुपये जुटाने जा रही दो कंपनियों ने अपने दस्तावेज वापस ले लिए। सेबी ने 2,500 करोड़ रुपये जुटाने पर विचार कर रही पांच कंपनियों के पेशकश दस्तावेज लौटा दिए।

बाजार में आया उतार-चढ़ाव तो निवेशकों ने बढ़ाया एकमुश्त दांव

अभिषेक कुमार
मुंबई, 26 मार्च

इक्विटी म्युचुअल फंड योजनाओं ने पिछले छह महीने (फरवरी 2024 तक) में एकमुश्त निवेश के तौर पर 46,200 करोड़ रुपये हासिल किए हैं जो इससे पिछले छह महीने में मिले निवेश का करीब तीन गुना है। फरवरी में निवेशकों ने एकमुश्त निवेश के जरिये म्युचुअल फंडों में 11,500 करोड़ रुपये लगाए जो मार्च 2022 के बाद का सर्वोच्च आंकड़ा है। उद्योग निकाय एम्फी के आंकड़ों से यह जानकारी मिली।

म्युचुअल फंडों के अधिकारियों ने कहा कि निवेशक इक्विटी में अतिरिक्त रकम के निवेश के लिए बाजार के उतार-चढ़ाव का इस्तेमाल कर रहे हैं। मिरे ऐसेट इन्वेस्टमेंट मैनेजर्स (इंडिया) के मुख्य निवेश अधिकारी नीलेश सुराणा ने कहा कि एकमुश्त निवेश आमतौर पर विवेक पर निर्भर करते हैं और निवेशक अक्सर अस्थिर बाजार के दौरान ऐसी रकम लगाना पसंद करते हैं। यह तरीका तार्किक और एसआईपी से अलग है। ऐक्सिस फंड के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्याधिकारी बी. गोपकुमार ने कहा कि इसकी वजह का पता लगाना मुश्किल है क्योंकि निवेशकों के विविध आधार को देखते हुए यह विभिन्न कारकों पर निर्भर करता है। हालांकि आम तौर पर देखा गया है कि जब-जब बाजार में गिरावट आती है तो एकमुश्त निवेश में तेजी आ जाती है।

म्युचुअल फंडों की इक्विटी योजनाओं में एकमुश्त निवेश फरवरी में दो साल की ऊंचाई पर पहुंच गया

हाल के महीनों में इक्विटी बाजार में उतारचढ़ाव रहा है और लार्जकैप इंडेक्स निफ्टी मजबूती के दौर में है। निफ्टी स्मॉलकैप 100 इंडेक्स में ज्यादा उतारचढ़ाव रहा क्योंकि नियामक ने मिडकैप व स्मॉलकैप शेयरों के बढ़ते भावों को लेकर चिंता जताई। 12 फरवरी को यह इंडेक्स 4 फीसदी से ज्यादा टूट गया। दो अन्य मौकों पर यह एक फीसदी से ज्यादा नीचे आया।

इसके साथ ही एसआईपी के जरिये शुद्ध निवेश अपेक्षाकृत सुस्त रहा। सितंबर 2023 से फरवरी 2024 के बीच शुद्ध एसआईपी निवेश 38,210 करोड़ रुपये रहा जो मार्च 2023 से अगस्त 2023 की अवधि के मुकाबले 22 फीसदी ज्यादा है।

माना जाता है कि एसआईपी निवेश का बाजार के हालात से कोई लेना देना नहीं होता है लेकिन एकमुश्त निवेश का बाजार के मौजूदा सेंटिमेंट से काफी जुड़ाव होता है। ज्यादातर एकमुश्त निवेश मौके के हिसाब से होते हैं। उद्योग के अधिकारियों ने कहा कि ऐसा ज्यादातर निवेश अमीर निवेशकों की तरफ से आता है।

सुराणा ने कहा कि बाजार की टाइमिंग हमेशा सही तरीका नहीं होती लेकिन जब बाजार सही कीमत वाले दायरे में हो तब अगर रकम का निवेश किया जाए तो समझदारी बनती है और बाजार में गिरावट के साथ यह चरणबद्ध तरीके से भी होना चाहिए। उन्होंने कहा कि स्मॉलकैप में जरूरत से ज्यादा आवंटन करने वाले निवेशकों को अपना पोर्टफोलियो दोबारा संतुलित करने पर विचार करना चाहिए। हमारा मानना है कि लंबी अवधि के लिए आदर्श फंड अब या तो मल्टीकैप या लार्ज व मिडकैप श्रेणी में होना चाहिए।

एकमुश्त निवेश में बढ़ोतरी ने इक्विटी योजनाओं में शुद्ध निवेश फरवरी के दौरान 26,860 करोड़ रुपये पर पहुंचा दिया जो मार्च 2022 के बाद का सर्वोच्च आंकड़ा है। एकमुश्त निवेश के तौर पर मिले 11,500 करोड़ रुपये के अलावा बाकी रकम एसआईपी या एनएफओ के जरिए आई है। एसआईपी ने जहां 6,470 करोड़ रुपये का योगदान दिया वहीं एनएफओ के जरिये 11,470 करोड़ रुपये मिले।

सवाल जवाब

भारत मजबूत बाजार के तौर पर उभरने में सक्षम

पीजीआईएम के प्रबंध निदेशक एवं इंस्टीट्यूशनल एडवायजरी ऐंड सॉल्युशंस के प्रमुख ब्रूस फेल्प्स ने समी मोडक के साथ साक्षात्कार में कहा कि पिछले साल के दमदार प्रतिफल के बावजूद अमेरिकी और भारतीय इक्विटी बाजारों की रफ्तार मजबूत बनी हुई है, क्योंकि उन्हें आर्थिक वृद्धि में सुधार से मदद मिल रही है। उनका मानना है कि आगामी राह उतार-चढ़ाव भरी होगी, वहीं इक्विटी निवेशकों के लिए संपूर्ण परिदृश्य अनुकूल बना रहेगा। पेश हैं बातचीत के मुख्य अंश:

वैश्विक, अमेरिकी और भारतीय इक्विटी बाजारों में तेजी को पिछले साल किन कारकों से मदद मिली?

जैसे ही हमने 2023 में प्रवेश किया, इसकी आशंका बनी हुई थी कि मंदी आने वाली है। कुछ ने इसके आने की 95 प्रतिशत आशंका जताई। इसलिए, यह आश्चर्य और राहत, दोनों है कि दुनिया का अधिकांश हिस्सा मंदी से बचने में कामयाब रहा। इस नए आशावाद ने शेयरों में तेजी को प्रेरित किया है, क्योंकि निवेशक मंदी की संभावना के बारे में कम आशंकित हैं।

इक्विटी बाजारों को मौजूदा समय में कौन से अनुकूल और प्रतिकूल कारकों का सामना करना पड़ रहा है?

अमेरिकी बाजार में, एक मुख्य चुनौती है अल्पावधि जमाओं पर ऊंची दर, जो 5 प्रतिशत पर है। यह शून्य प्रतिशत प्रतिफल से काफी अधिक है। निवेशकों को कई साल शून्य स्तर के प्रतिफल का सामना किया था। इसके परिणामस्वरूप, बड़ी मात्रा में पूंजी को दरकिनार कर दिया गया है, जिससे निवेशक जल्दबाजी में बाजार में उतरने में अनिच्छा दिखा रहे हैं। भूराजनीतिक अनिश्चितता ने अन्य चुनौती पैदा की है। इस साल वैश्विक चुनावी वर्ष होने की वजह से राजनीतिक परिदृश्य से जुड़ी अनिश्चितता सामने आई जिससे कुछ निवेशकों को निवेश पर 5 प्रतिशत प्रतिफल से संतुष्ट रहना पड़ा। जहां भविष्य के लिए उम्मीद बनी हुई है, लेकिन यह अक्सर देखा जाता है कि वर्ष की दूसरी छमाही अस्थिरता कायम रहती है। इस प्रकार, वर्ष के अंत में पूंजी लगाने से पहले मूल्यांकन के नरम होने की प्रतीक्षा करके भविष्य की अस्थिरता का लाभ उठाना समझदारी हो सकती है। नकारात्मक अस्थिरता की स्थिति में, निवेशक अमेरिकी फेडरल रिजर्व की दरों में कटौती करने की बढ़ती संभावना पर ध्यान दे सकते हैं। कुल मिलाकर, इससे इक्विटी निवेशकों के लिए अनुकूल पृष्ठभूमि तैयार हुई है।

क्या आप मानते हैं कि अमेरिकी इक्विटी का अच्छा समय समाप्त हो गया है? क्या रिटर्न में कमी या सुधार की उम्मीद है?

नहीं, मैं ऐसा नहीं मानता। मेरा मानना है कि अमेरिकी अर्थव्यवस्था मजबूत और दमदार वृद्धि (1.4 प्रतिशत से 2 प्रतिशत के बीच) के लंबे चरण में प्रवेश कर रही है। यह दृष्टिकोण 1990 के दशक के आर्थिक परिदृश्य से मिलता जुलता है। विशेष रूप से, मुद्रास्फीति की उम्मीदें काफी अनुरूप हैं। इसके अलावा, विशेष रूप से ऊर्जा परिवर्तन और आपूर्ति श्रृंखला पुनर्गठन जैसे क्षेत्रों में नए निवेश की ज्यादा आवश्यकता है। ये निवेश वृद्धि की रफ्तार मजबूत बनाएंगे। नई इक्विटी पूंजी के लिए मांग बरकरार है और प्रतिफल भी ऊंचा बना रह सकता है। जहां अमेरिका में इक्विटी मूल्यांकन मौजूदा समय में ऊपर है, लेकिन इतना भी ज्यादा नहीं है कि बड़ी गिरावट खतरा पैदा हो सके।

क्या आपको अन्य परिसंपत्ति वर्ग पसंद है?

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, रियल एस्टेट बाजार ने अपने सबसे बुरे दौर का सामना किया है, जिससे अमेरिका और यूरोप में सूचीबद्ध रियल एस्टेट निवेश ट्रस्टों और निजी रियल एस्टेट फंडों में आकर्षक अवसर पैदा हुए हैं। अन्य निजी परिसंपत्तियों ने अच्छा प्रदर्शन किया है। निजी इक्विटी (पीई) को आईपीओ बाजार के सुधार से लाभ मिलेगा। संस्थागत निवेशक इन क्षेत्रों पर ज्यादा ध्यान दे रहे हैं। इसके अलावा सार्वजनिक बॉन्ड भी अनुकूल राह पर बढ़ने को तैयार हैं। रियल यील्ड काफी ऊपर हैं और ये निगेटिव 1 प्रतिशत से पॉजीटिव 2 प्रतिशत पर पहुंची हैं। यह बदलाव बेहद महत्वपूर्ण है और इससे बॉन्ड और शेयर प्रतिफल के बीच अंतर काफी घटा है। पिछले रिकॉर्ड देखें तो अंदाजा लग जाएगा कि आगामी बॉन्ड प्रतिफल शेयर प्रतिफल के साथ काफी प्रतिस्पर्धी साबित हो सकता है, खासकर रिस्क-समायोजित आधार पर। इसलिए किसी के पोर्टफोलियो में बॉन्डों को शामिल करना अच्छा अवसर प्रदान करता है।

वैश्विक निवेशकों के नजरिये से भारतीय बाजारों का आपका क्या आकलन है?

भारत अंतरराष्ट्रीय निवेशकों का ध्यान आकर्षित कर वैश्विक पैमाने पर बेहद मजबूत वृद्धि वाले बाजारों में से एक के तौर पर उभरने को तैयार है। देश ने मजबूत वृहद आर्थिक स्थायित्व प्रदर्शित किया है। इसके परिणामस्वरूप, भारत अवसर तलाशने वाले वैश्विक निवेशकों के लिए संभावनाएं पेश करता है।

भारती हेक्साकॉम ने कीमत दायरा तय

दूरसंचार परिचालक भारती एयरटेल की सहायक कंपनी भारती हेक्साकॉम ने आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) के लिए 542-570 रुपये प्रति शेयर का मूल्य दायरा तय किया है। कंपनी ने कहा कि आईपीओ तीन से पांच अप्रैल तक खुलेगा। *भाषा*

बैंक ऑफ़ बड़ौदा Bank of Baroda Hamesha Aapke Liye
www.bankofbaroda.in

निविदा सूचना

बैंक ऑफ़ बड़ौदा निम्नलिखित प्रस्तावों हेतु अनुरोध आमंत्रित करता है:

- 3 वर्षों के लिए ऑन-साइट सहयोग के साथ महत्वपूर्ण स्थानों पर HPE हार्डवेयर के वार्षिक रखरखाव अनुबंध (एएमसी) का नवीकरण
- 3 वर्षों के लिए ऑन-साइट सहयोग के साथ महत्वपूर्ण स्थानों पर CISCO हार्डवेयर के वार्षिक रखरखाव अनुबंध (एएमसी) का नवीकरण
- 3 वर्षों के लिए ऑन-साइट सहयोग के साथ महत्वपूर्ण स्थानों पर Dell हार्डवेयर के वार्षिक रखरखाव अनुबंध (एएमसी) का नवीकरण
- 3 वर्षों के लिए ऑन-साइट सहयोग के साथ महत्वपूर्ण स्थानों पर हार्डवेयर के वार्षिक रखरखाव अनुबंध (एएमसी) का नवीकरण
- एसएसएल (सिक्योर सॉकेट लेयर) प्रमाणपत्रों की आपूर्ति और सहयोग।

विवरण बैंक की वेबसाइट www.bankofbaroda.in के निविदा खंड और गवर्नमेंट ई-मार्केटप्लेस (GeM) पोर्टल पर उपलब्ध है।

"अन्य सूचना", यदि कोई हो, को बैंक की वेबसाइट www.bankofbaroda.in पर निविदा खंड में जारी किया जाएगा। प्रस्ताव को अंतिम रूप से प्रस्तुत करने से पहले बोलीकर्ता इसे अवश्य देख लें।

प्रस्ताव प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि: **18 अप्रैल, 2024**

स्थान: मुंबई
दिनांक: 27.03.2024
मुख्य महाप्रबंधक (आईटी)
(150 / 23-24)